Indian J. Soc. & Pol. 06 (02):83-86 : 2019 **ISSN: 2348-0084(P)**
ISSN: 2455-2127(O)

एनी बेसेन्ट के सामाजिक विचार

अम्बुजेश कुमार मिश्र[1]
[1]शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0)

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध पत्र का मूल उद्देश्य ''एनी बेसेन्ट के सामाजिक विचार '' का विशद् विश्लेषण अध्ययन प्रस्तुत करना है। एनी बेसेन्ट मानस पटल में भारत के प्रति अगाध प्रेम और अपरिमित सहानुभूति थी। भारत को उन्होंने अपनी जन्मभूमि के सदृश माना और हिन्दूत्व को अपना धर्म। उन्होंने हिन्दूत्व के पुनरूथान का प्रबल प्रयास किया तथा समाज सुधार आन्दोलनों में योगदान दिया। उन्होंने प्राचीन मूल्यों के आधार पर समाज के पुनर्गठन को सामाजिक पुनरूथान के रूप में देखा। वे भारत की सामाजिक व्यवस्था में निहित जातीय विभेद विवाह में व्याप्त बुराईयाँ यथा– पुनर्विवाह, विधवा विवाह, विधुर विवाह को एवं शिक्षा में यथोचित सुधार हेतु प्रबल प्रयास की। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में निहित जातिगत भेदभाव, खान–पान सम्बन्धी (मद्य निषेध) एवं प्रतिबन्धों तथा अस्पृश्यता की कटु आलोचना की। अछूतोद्धार कार्यक्रम के आरम्भ कर अस्पृश्यता की समस्या को जो धर्म से सम्बन्धित न होकर स्वच्छता, स्वास्थ्य, शिक्षा एवं निर्धनता से सम्बन्धित है, के उन्मूलन हेतू ठोस प्रयास की। स्त्रियों की समस्या के समाधान हेतु 1917 में कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन जिसकी अध्यक्षता वे स्वयं की थी, में स्त्रियों को मताधिकार प्रदान करने से सम्बन्धित प्रस्ताव पास कराया तथा 1917 में ही स्त्रियों को सामाजिक, राजनीतिक अधिकार प्रदान करने के उद्देश्य से 'वीमेन्स इण्डिया एसोसियेशन' की स्थापना की। सामाजिक सुधारों के क्रम में ही उन्होंने 'सेवक बन्धु' तथा यंग मेन्स एसोसियेशन' की भी स्थापना की। 'सेवक बन्धु' संस्था के पीछे उनका उद्देश्य सामाजिक बुराईयों जैसे बाल विवाह, जाति व्यवस्था, विधवा विवाह, विदेश गमन आदि को दूर करना था।

KEYWORDS : *एनी बेसेंट, थियोसोफिकल सोसाइटी, सामाजिक विभेद, मद्य निषेध*

एनी बेसेन्ट जब भारत आयीं तो उन्होंने देखा कि भारतीय समाज बड़ी अजीब स्थिति से गुजर रहा था। 18वीं शताब्दी का भारतीय समाज अनेकानेक कुरीतियों का शिकार था। लोग अनैतिकता और अंधविश्वास का शिकार होकर आदर्श के सोपान से नीचे गिरे पड़े थे।(बेसेन्ट, 1917, पृ0 270) अतः भारतीय परिस्थिति को देखकर यहाँ के समाज को सुधारना उन्होंने अपना कर्त्तव्य समझा।(पाण्डेय,1995 पृ0122) इसी परिप्रेक्ष्य में उन्होंने जाति, विवाह, शिक्षा में वांछित सुधारों के लिये प्रयास किया।

एनी बेसेन्ट ने शुरू से ही अपने समाजवादी चिन्तन को व्यवहारिक रूप प्रदान करने का प्रयत्न किया। एनी बेसेन्ट ने जिस समय भारतीय समाज सुधार के क्षेत्र में कार्य प्रारम्भ किया उसी समय समाज में पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव तीव्र गति से बढ़ रहा था। ऐसे में उन्होंने कहा कि –''भारत को भारतीय भावनाओं, भारतीय परम्पराओं, भारतीय चिन्तन और भारतीय विचारों के आधार पर शासित होना चाहिए।''(वेस्ट, 1929,पृ0206) देशभक्ति और मानवता की भावना व विचार का उनकी प्रत्येक योजनाओं में महत्वपूर्ण स्थान था।(अजीत, 2001,पृ054) उन्होंने यह देखा कि भारतीय आस्तिकता और नास्तिकता के बीच झटके खा रहे थे, यहाँ का राष्ट्रीय जीवन विश्रृँखलित हो गया था और पाश्चात्य जीवन शैली के अन्धानुकरण कर्त्ता बन भारतीय अपनी प्राचीन सभ्यता को भूल चुके थे। उसी समय उन्होंने 'न्यू इण्डिया' पत्र के द्वारा भारत को पुनः अपने गौरवमान अतीत से मिलवाया और सामाजिक व्यवस्था में सुधार किया।(प्रधान, पृ0132)

उनका मानना था कि हिन्दू धर्म में स्थापित सामाजिक व्यवस्था एक उत्तम समाज के निर्माण के लिये आवश्यक सभी नियमों को अपने में समाहित किये हुए हैं, अतः भारतीय समाज इन नियमों का पालन करे तो भारत में निश्चित रूप से एक सुदृढ़ समाज की स्थापना होगी। उन्होंने भारतीय धर्म में वर्णित जाति व्यवस्था, वर्णाश्रम व्यवस्था को पूर्णतः वैज्ञानिक बताया तथा कहा कि इसका पालन किया जाना चाहिए।''(बेसेण्ट, 1913, पृ0788) वे प्रत्येक वर्ग और उसके अन्तर्गत किये जाने वाले कार्य विभाजन को समाज की प्राचीन व्यवस्था के लिये आवश्यक मानती थीं।(बेसेण्ट 1913–ए,पृ095) इस प्रकार उन्होंने वर्ण व्यवस्था में व्याप्त रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों का विरोध कर उन्हें दूर करने के लिये अपने लेखों तथा भाषणों का सहारा लिया। उन्होंने सामाजिक समानता स्थापित करने के लिये दलित वर्ग को समाज का एक आवश्यक अंग माना तथा कहा कि समाज के प्रत्येक अंग के शक्तिशाली होने पर ही समाज का उत्थान हो सकता है। क्योंकि – ''सभी मनुष्य दैवीय प्रकृति से युक्त एक समान प्राणी हैं।''(पाण्डेय,1995,पृ0122)

एनी बेसेन्ट ने यह माना कि प्राचीन काल में भारतीय जातियों का नामकरण उनके गुणों के आधार पर किया गया था। महाभारत के अनुसार यदि –''शूद्र में ब्राह्मण के गुण है तो वह ब्राह्मण है और यदि ब्राह्मण में शूद्र के गुण है तो वह शूद्र समझा जायेगा।''(नागोरी,1995 पृ028) उनका मानना था कि – प्राचीन जाति व्यवस्था का वर्तमान समय में अन्त हो चुका है। क्योंकि –''प्रत्येक जाति के लोग दूसरी जाति के कार्य को ग्रहण करने लगे हैं। जिससे समाज में अव्यवस्था और अराजकता उत्पन्न हो गयी हैं इसे दूर करने का एकमात्र उपाय है, वर्ण व्यवस्था के आदर्शों का अनुपालन हो, हर व्यक्ति अपनी जाति के विशिष्ट गुणों का अभ्यास परिश्रम से करे और

1: Corresponding Author

अभिमान, मिथ्या गर्व तथा लाभ उठाने की चेष्टा न करे। जन्म से ब्राह्मण होना पर्याप्त नहीं जिनकी आत्मा शुद्ध है वही ब्राह्मण है।(प्रधान,134द्ध) अतः उन्होंने अपनी दूसरी कृति ''ए प्ली फार सोशल रिफार्म'' में जाति व्यवस्था की कटु आलोचना की(पाण्डेय,1995 पृ0122) और हिन्दू समाज में सुधार के उद्देश्य से इन्होंने प्रथम दृष्टया कठोर या रूढ़ जाति प्रथा के स्थान पर नमनीय जाति प्रथा के विकास के लिये प्रयास किया। परन्तु कालान्तर में वे विश्वास करने लगी कि और अधिक आमूल परिवर्तनकारी सुधारों की आवश्यकता है। अतः 1913 ई0 में यह घोषित किया कि जाति प्रथा अपनी उपयोगिता से अधिक जी चूकी है और अब इसका अन्त होना ही चाहिए।(बेसेण्ट, 1913, पृ0788)

जीवनपर्यन्त एनी बेसेन्ट भारत में सामाजिक कार्यों में भाग लेती रहीं और थियोसोफिकल सोसायटी के विचारों को कार्य के रूप में परिणत करने का प्रयत्न करती रहीं। एनी बेसेन्ट और थियोसोफिकल सोसायटी के ऐसे कार्य से भारतीय समाज का लोकतन्त्रीकरण किये जाने में सहायता मिली और सामाजिक समानता के आदर्श का प्रचार–प्रसार हुआ जो आधुनिक भारत के राजनैतिक पुनर्जागरण में मील का पत्थर है।

सामाजिक समानता की पुनर्स्थापना की दिशा में एनी बेसेन्ट का एक महत्वपूर्ण कार्य अछूतोंद्धार था। उन्होंने सिद्ध कर दिया कि हिन्दू धर्म में अस्पृश्यता के लिए कोई स्थान नहीं है। उन्होंने हिन्दुओं से अपील किया कि ''वह महान् पाठ सीखो जिसे हिन्दू धर्म सिखाता है कि सब में एक जीवन है, एक ईश्वरीय जीवन, एक परमात्मा जो अछूत में है और सवर्ण लोगों में भी है, एक परमात्मा दीन–दुखी लोगों में है और ऐश्वर्यशाली लोगों में भी है। अपने भाई अछूत की सूरत में परमात्मा तुम्हारी भी याद करेगी और तुम्हें इस आनन्द की ओर ले जाएगा जिसकी तुम इच्छा करते हो।''(बेसेण्ट 1925, पृ0145)

अछूत प्रथा की समस्या को एनी बेसेन्ट ने धार्मिक की अपेक्षा स्वच्छता और स्वाथ्य विज्ञान की दृष्टि से समझाने का प्रयत्न किया। अछूत लोगों के उद्धार हेतु उन्होंने विस्तृत योजना प्रस्तुत की। उनका कहना था कि प्रथमतः अछूतों के साथ सामाजिक समागम करने के लिए प्रेरित किया जाए। इसके बाद अछूतों को शिक्षित करना और प्रशिक्षण देना आवश्यक है, जिससे वे समाज के व्यापक कार्य क्षेत्र में सहभागी बन सकें और समाज में उन्हें समुचित आदर प्राप्त हो सके। इसके साथ ही अछूतों को इस बात के प्रति सचेत किया जाना भी आवश्यक है कि समाज में उनके क्या अधिकार हैं और उसके प्रति उनके क्या कर्त्तव्य है?(बेसेण्ट 1917, पृ0 137)

हिन्दू समाज में अछूत प्रथा की भयावह स्थिति को बताते हुए एनी बेसेन्ट ने कहा कि यदि हिन्दू लोग अपने अछूत भाईयों को नहीं अपनाते हैं, तो ईसाई धर्मप्रचारक उन्हें ईसाई बना लेते हैं और मुसलमान लोग उन्हें अपने धर्म में शामिल कर लेते हैं। ईसाई और इस्लाम धर्मों में उनके साथ अछूत जैसा व्यवहार नहीं किया जाता। तब हिन्दू लोग स्वयं भी उनके और अपने घर में आने–जाने से परहेज नहीं करते। यह अछूतों का हिन्दू धर्म से पृथक धर्म होने के लिए रिश्वत देने के बराबर है। इससे भारी संख्या में अछूत लोग हिन्दू धर्म से अलग व उसके विरूद्ध होते जा रहे हैं, जिससे हिन्दू समाज के समक्ष स्थायित्व का वृहद संकट उत्पन्न हो रहा है।(वही,109)

अछूत प्रथा के निवारण के पक्ष में एनी बेसेन्ट ने जो विचार रखे, उनमें एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विचार यह था कि स्वतन्त्रता और अछूत प्रथा का परस्पर मेल नहीं है। उनका यह विचार आधुनिक भारत के राजनैतिक पुनर्जागरण की दृष्टि से पर्याप्त महत्व रखता है। उनका कहना था कि स्वराज प्राप्ति के साथ जुड़े हुए भारतवासियों के कुछ निश्चित कर्त्तव्य हैं, जिनमें प्रथम यह है कि ''हम अपने हाथों को अछूत प्रथा के पाप से धोकर पहले अपने घर को सुधार लें, हम तब तक विदेशों में विद्यमान रंगभेद की अछूत प्रथा के विरूद्ध विवेकसम्मत विचार प्रकट नहीं कर सकते, जब तक हम अपने देश में शूद्रों के साथ व्यवहार और अछूत प्रथा को समाप्त न कर दें।(वही, 111)

एनी बेसेन्ट का उद्देश्य अछूतों को अर्द्ध–दासत्व की स्थिति से मुक्त करके उन्हें समाज में नागरिक का पूर्ण दर्जा प्रदान कराने का था। सामाजिक समानता की पुनर्स्थापना की दृष्टि से अछूतोद्धार सम्बन्धी उनके विचार उल्लेखनीय महत्व रखते हैं। अछूतोद्धार के महत्व को पहचान कर आगे चलकर महात्मा गाँधी ने इस दिशा में काफी वृहद पैमाने पर प्रयत्न किया और आधुनिक भारत के राजनैतिक पुनर्जागरण में अछूतोद्धार के कार्य को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया।

एनी बेसेन्ट ने तत्कालीन समाज में व्याप्त उन कुरीतियों के विरूद्ध आवाज उठायी, जो स्त्रियों की स्थिति को खराब करके उसे अबला बनने पर मजबूर कर रहे थे। उन्होंने 'विधवा विवाह' का समर्थन किया तथा बताया कि –''वेद और महाभारत काल के ग्रन्थों में विधवा विवाह होने की पुष्टि होती है।''(बेसेण्ट, 1942, पृ0328) उनका कहना था कि कोई भी 'कर्म' विधवा विवाह में बाधक नहीं है।(बेसेण्ट, 1913–ए,पृ068) तथा विधवा विवाह भारत की श्रेष्ठ व संस्कृति परम्परा के अनुरूप है।(बेसेण्ट, 1917, पृ0387.388) इन्होंने वैधव्य का मुख्य कारण लड़कियों की अपेक्षा लड़कों में मृत्यु दर अधिक होना बताया। उनकी सोंच थी कि विधुरों को विधवाओं से ही विवाह करना चाहिए। विधवाओं की स्थिति में सुधार के लिये उन्हें शिक्षित कर नर्स बनाने की पक्षधर थीं।(भारद्वाज, पृ0118) एनी बेसेन्ट ने 'अन्तर्जातीय विवाह' को हिन्दू धर्म के अनुकूल तथा भारतीय समाज के अनुरूप माना। 'बहु विवाह' को नारी गौरव का अपमान एवं अभिशाप मानते हुए उन्होंने इसका व्यापक विरोध किया। स्त्रियों के उत्थान के कार्य के लिये सरोजनी नायडू की सहायता से 'आल इण्डिया वुमन एसोशियेशन' की स्थापना की। 'बाल विवाह' की समाप्ति के लिये उनके सुझाव पर बनारस के सेन्ट्रल हिन्दू कालेज में विवाहित लड़कों का प्रवेश निषिद्ध कर दिया गया।

वे नारी उत्थान के लिये नारी शिक्षा को महत्वपूर्ण मानती थीं। अतः 1904 में प्रकाशित अपने लेख 'द एजुकेशन ऑफ इण्डियन गर्ल्स' में बालिकाओं को हर तरह की शिक्षा प्रदान करने की बात कही।''(बेसेण्ट,1904 पृ0101) वे स्त्री–पुरुष समानता की पक्षधर थीं। जब वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 1917 ई0 के अधिवेशन में प्रथम महिला अध्यक्ष बनी तो पुरुषों के समान ही स्त्रियों के शिक्षा, स्वायत्तता तथा मताधिकार पर बल दिया तथा दिसम्बर 1917 में सरोजनी नायडू सहित अन्य आठ महिलाओं के साथ माण्टेग्यू से मिली तथा स्त्रियों के

मताधिकार की माँग कीं।(दिनकर, 2015,पृ0482.486) इन्होंने थियोसोफिकल सोसायटी के तत्वाधान में कार्यकर्त्ताओं को संगठित कर 'ब्रदर्स ऑफ सर्विस' के नाम से एक संस्था का गठन किया। जो राष्ट्रीय और भारत की सर्वांगीण विकास के लिये कार्य करती थी। इस संस्था की सदस्यता ग्रहण करने वाले व्यक्ति को एक प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर करना पड़ता था जिसकी निम्नलिखित शर्तें थीं –

1. मैं जाति–पाँति पर आधारित छूआछूत नहीं करूँगा।
2. मैं अपने पुत्रों का विवाह 18 वर्ष की आयु से पहले तथा अपने पुत्रियों का विवाह 16 वर्ष की आयु से पहले नहीं करूँगा।
3. मैं जनसाधारण में शिखा का प्रचार करूँगा। मैं पत्नी, पुत्रियों और कुटुम्ब की अन्य स्त्रियों को शिक्षा दिलवाऊँगा।
4. कन्या शिक्षा का प्रचार करूँगा तथा स्त्रियों की समस्याओं को सुलझाने का प्रयास करूँगा।
5. मैं सामाजिक और राजनीतिक जीवन में वर्ग पर आधारित भेदभाव को मिटाने का प्रयास करूँगा।
6. मैं सक्रिय रूप से उन सामाजिक बन्धनों का विरोध करूँगा जो पुनर्विवाह को प्रतिबन्धित करती हैं।
7. मैं कार्यकर्त्ताओं में आध्यात्मि शिक्षा और सामाजिक और राजनीतिक उन्नति के क्षेत्र में एकता लाने का प्रयत्न इण्डियन नेशनल कांग्रेस के नेतृत्व और निर्देशन में करूँगा।

इसके अलावा एनी बेसेन्ट ने नैतिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास के लिये 'सरोज चक्र' नामक संस्था बनायी जिसमें बड़ों को यह संदेश दिया जाता था कि बच्चों को प्यार चाहिए। उनके साथ कठोरता का बर्ताव न करें बल्कि उन्हें उनके बचपन का आनन्द उठाने दें।

इन्होंने निर्धनों की सेवा का श्रेष्ठ आदर्श समाजवाद में देखा। उनका कहना था कि भूख और गरीबी से विवश होकर स्त्रियाँ अपना शरीर बेचने को बाध्य होती हैं तथा श्रम के बोझ से स्त्री व पुरुष असमय वृद्धावस्था को प्राप्त कर लेते हैं। इसका मुख्य उत्तरदायी पूँजीपतियों को ठहराया जो धन के साधनों पर व्यक्तिगत स्वामित्व स्थापित कर श्रमिकों से यन्त्र की भाँति काम लेते हैं, तथा उत्पादन से होने वाले लाभों पर श्रमिकों का कोई अधिकार नहीं बनता। 1884 ई0 में उन्होंने अपने 'क्रिश्चियन चैरिटी' नामक लेख में श्रमिकों के कल्याण के लिये पांच दिन का सप्ताह तथा आठ घण्टे का कार्य दिवस लागू करने की माँग की थी तथा 'द डिस्ट्रीब्यूशन ऑफ पोलिटिकल पावर' नामक लेख में श्रमिकों के कार्य दिवस को दस घण्टे से कम करके आठ घण्टे किये जाने की प्रबल माँग की।

एनी बेसेन्ट के आगमन के समय विदेश यात्रा के बारे में समाज का दृष्टिकोण बहुत संकुचित था इसे अधार्मिक कार्य समझा जाता था। उन्होंने इस बुराई को दूर करने का हर सम्भव प्रयास किया। यह बताया कि प्राचीन ऐतिहासिक अन्वेषणों से यह ज्ञात होता है कि जावा, सुमात्रा, कम्बोज, लंका, तिब्बत और चीन जैसे देशों में भारतीय सभ्यता व संस्कृति के प्रभाव व प्रमाण पाये गये है।(पन्निकर, 1961 पृ010) अतः यह प्रमाणित हो जाता है कि भारतीय प्राचीन काल में इन देशों में गये थे। उनका मानना था कि विश्व राष्ट्रमण्डल में गौरवशाली स्थान प्राप्त करने के लिये विदेशों से सम्बन्ध रखना आवश्यक है, क्योंकि वर्तमान समय में कोई भी राष्ट्र अपने को अलग रखकर अपना उत्थान नहीं कर सकता है।

इस प्रकार एनी बेसेन्ट ने भारतीय समाज का पुनरूत्थान कर भारत को नवजीवन की ओर अग्रसर किया। उनका कहना था कि धर्म से भी समाज में व्याप्त बुराइयाँ दूर हो सकती है, एक बुराई रहित समाज ही एक अच्छे राष्ट्र की बुनियाद है अतः उन्होंने धार्मिक शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया तथा हिन्दू परम्पराओं, कर्मकाण्डों का ऐसे समय में पक्ष पोषण किया, जब इन्हें अन्धविश्वास मानकर तुच्छ दृष्टि से देखा जाता था। उन्होंने थियोसाफिकल सोसायटी के माध्यम से धर्म एवं समाज सुधार आन्दोलन चलाकर जन जागृति लाने का प्रयास किया। उनकी मान्यता थी कि सामाजिक नियमों में कोई परिवर्तन बिना जन जागृति के सफल नहीं हो सकता। चूँकि प्राचीन भारत में हिन्दू विधि का कोई स्थायी रूप नहीं था। परन्तु इसमें समय–समय पर सुधार होते रहे, परन्तु ये सुधार दोषपूर्ण होते थे क्योंकि इनका आधार विस्तृत एवं सामाजिक नहीं था। इसलिये इनका यह विचार था कि स्वतंत्र भारत की भावी विधायिका को सामाजिक बुराईयों को दूर करने हेतु कानून निर्माण करने का अधिकार दिया जाना चाहिए। वह यह भी समझ चुकी थीं कि दूषित अर्थव्यवस्था भी सामाजिक पिछड़ेपन की जिम्मेदार है। अतः आर्थिक परिवर्तन भी आपेक्षित है। आर्थिक परिवर्तन से सामाजिक परिवर्तन अवश्य ही प्रभावित होगा, जिससे समाज का नवीन परिवर्तित रूप उभर कर सामने आयेगा। अतः स्पष्ट है कि वह अपने सामाजिक विचारों के बुनियाद में प्राचीनता और आधुनिकता के मिश्रित रूप की समर्थक थीं। इस हेतु उन्होंने अनेक सामाजिक संस्थाएँ देश के विभिन्न भागों में स्थापित करवाकर लाखों रूपये समाज सुधार हेतु खर्च किये। जिनमें मुख्यतः 'सन्स ऑफ इण्डिया', 'डाटर्स ऑफ इण्डिया', 'द्रदर्स ऑफ इण्डिया', 'स्टाल वार्टस', 'यंग मेंस इण्डियन एसोसिएशन' एवं 'भारत स्काउट एण्ड गाइड' है। इन संस्थाओं द्वारा लाखों की संख्या में समाज सुधारक तथा समर्पित राजनैतिक कार्यकर्त्ता सृजित हुए, जो वर्तमान समय में भी समाज सुधार में रत होकर भारत की सामाजिक उत्थान में अपना अमूल्य योगदान दे रहे है।

REFERENCES

बेसेन्ट एनी (1917) *'दी बर्थ ऑफ न्यू इण्डिया'*,थियोसोफिकल पब्लिशिंग हाउस

बेसेन्ट स्पिरिट सीरिज (1942) *एनी बेसेन्ट, नव भारत की निर्माता,* मद्रास, थियोसोफिकल पब्लिशिंग हाउस,

बेसेन्ट, एनी (1913) : यूनाइटेड इण्डिया, *द इण्डियन रिव्यू,* अक्टूबर, 1913

बेसेन्ट, एनी (1925) *'शैल इण्डिया लिव ऑर डाई?',* नेशनल होमरूल लीग

बेसेन्ट, एनी (1904) *हिन्दू आइडियल्स,* बनारस, थियोसोफिकल पब्लिशिंग सोसायटी

बेसेन्ट, एनी (1913) वेक अप इण्डिया (जर्नल), वाल्यूम–22,मद्रास, थियोसोफिकल पब्लिशिंग हाउस, अड्यार

बेस्टरमैन, थियोडोर (1934) *मिसेज एनी बेसेन्ट, ए मार्डन प्रोफेट*, लंदन, के पॉल ट्रेन्च, एण्ड कं0 लिमि0

दिनकर, रामधारी सिंह (2015) *संस्कृति के चार अध्याय,* इलाहाबाद, लोकभारती,

भारद्वाज, प्रवेश : *उदारमना एनी बेसेन्ट,* वाराणसी, प्रज्ञा पत्रिका, बी0एच0यू0, वाराणसी, 1996–2001

पन्निकर, के0एम0(1961) : *हिन्दू सोसायटी ऐट क्रास रोड,* एशिया पब्लिशिंग हाउस, न्यूयार्क

पाण्डेय, धनपति (1995): *आधुनिक भारत का इतिहास,* खण्ड–2, नई दिल्ली, मोतीलाल बनारसी दास, पब्लिशर्स

प्रधान, अवधेश *भारतीय नवजागरण और एनी बेसेन्ट,* प्रज्ञा पत्रिका, वाराणसी, बी0एच0यू0, 1996–2001

वेस्ट, जियोफ्रेय (1929) : *द लाइफ ऑफ एनी बेसेन्ट,* लंदन, गेराल्ड हाउस लिमिटेड

नागोरी, एस0एल0 (1995) *एनी बेसेन्ट एवं भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन,* जयपुर, पॉइन्टर पब्लिकेशन्स

अजीत, ज्ञान कुमारी (2001) : *पद चिन्ह,* उ0प्र0 फेडरेशन, इलाहाबाद, थियोसोफिकल पब्लिशिंग सोसायटी,